जयप्रकाश का राजनीतिक दर्शन

जयप्रकाश अब सर्वोदय आंदोलन के प्रमुख लोगों में से एक हैं सर्वोदय राजनीतिक आंदोलन नहीं है। जयप्रकाश भी सैद्धांतिक अर्थों में राजनीतिक नहीं है इसलिए उनके राजनीतिक विचारों का अध्ययन उनकी घोषित नीति के विरुद्ध हो सकता है। किंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि केवल सक्रिय राजनीति से अपने को अलग रखा है राजनीतिक दर्शन से नहीं। आज की स्थिति में वह राजनीतिक दर्शन की जितनी सेवा कर सकते हैं संभवत सन 1954 से पूर्व इतनी सेवा कर सकते। उनके राजनीतिक विचारों का आधार सर्वोदय दर्शन है, अतः मूल्यों से सर्वोदय दर्शन की राजनीतिक आकांक्षाओं ने जयप्रकाश जी के राजनीतिक विचारों के आधार भूमि है।

राज्य सत्ता को अधिकाधिक शक्तिशाली बनाने के पक्ष में नहीं है। उनका उद्देश्य मनुष्य का बहुमुखी विकास करना है। उसे परमुखापेक्षी बनाकर वह उसे व्यक्तिविहीन नहीं करना चाहती।इस प्रकार वह विहीन समाज रचना के लिए सत्ता विहीन राज व्यवस्था की वकालत करते हैं। समाजवाद के यूरोपिय स्वरूप में उन्होंने हिंसा की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का आभास मिला वह उससे अलग हो गए उन्होंने साधनों के प्रति अपना समाजवादी क्रांतिकारी दृष्टिकोण पूरी तरह से बदल लिया। वह साधनों की पवित्रता का आग्रह सबसे पहले करते हैं उनका यह कहना है रूस में निदित साधनों से निदित साध्यों की निष्पत्ति हुई। खासतौर से जब अपने विरोधी नेताओं को खत्म करने की प्रक्रिया चल रही थी, उस बीच भयंकर से भयंकर जुर्म करने के लिए जिन घृणित साधनों का उपयोग किया गया, मार्क्सवादी क्रांतिकारी नीति के विरुद्ध मेरा मन बगावत कर उठा आज साधनों के प्रति पवित्रता के आग्रह ने उन्हें पाश्चात्य समाजवाद से भी दूर कर दिया। आज वह यह मानने लगे हैं कि समाजवाद मानव जाति को स्वतंत्रता, समानता, बंधुतव और शांति के उत्कृष्ट लक्ष्य तक नहीं ले जा सकता । भारत की परिस्थितियां यूरोप की

परिस्थितियों से भिन्न है। समाजवाद मनुष्य के जीवन को-‘ और चाहिए -और चाहिए ‘की इच्छा के अधीन कर देता है। इस प्रवृत्ति से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने राजनीति के स्वरूप को बदलने का निश्चय किया। अहिंसक समाजवादी क्रांति के साथ आज उनका निकटतम संबंध है। वह दल विहीन राजनीति के समर्थक हैं। सत्ता के विकेंद्रीकरण की सर्वोदय योजना को जयप्रकाश जी का पूरा समर्थन है, वह राज्य की सत्ता, व्यवहार और क्षेत्र जहां तक संभव हो सीमित करने के पक्ष में है। वह एक ऐसे समाजवाद की रचना में संलग्न है जो सहकार, आत्मानुशासन और उत्तरदायित्व की भावना से परिपूर्ण हो। स्पष्टता वह ग्राम स्वराज के सपनों को साकार करने में प्रयासरत रहे।